118<11 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 | 1800 |

म .भा .दी . 🖁 ॥ २८ ॥ इत्यारण्यंकेपर्वणिनैलकंठीयेभारतभावदीपेचत्वारिशोऽध्यायः ॥ ४० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ तस्येति अस्तंस्वस्थानं अदर्शनंच ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ परंअत्यंतंकतार्थंकत 🖺 वनपर्क ततःश्वभंगिरिवरमीश्वरस्तदासहोमयासिततटसानुकंदरं॥विहायतंपतगमहिंभसेवितंजगामखंपुरुषवरस्यपश्यतः॥२८॥ इतिश्रीमहाभारतेआरणंयकेपर्व णिकैरा०शिवप्रस्थानेचत्वारिंशोऽध्यायः॥४०॥ ॥७॥ ॥७॥ वैशंपायनउवाच तस्यसंपश्यतस्त्वेवपिनाकीटषभध्वजः॥ जगामादर्शनंभानु लींकस्येवास्तमीयिवान्॥ १॥ ततोर्जुनःपरंचकेविस्मयंपरवीरहा॥ मयासाक्षान्महादेवोद्दष्टइत्येवभारत॥ २॥ धन्योरम्यन्गरहीतोस्मियन्मयात्र्यंवकोहरः॥ पिनाकीवरदोरूपीदृष्टःस्पृष्टश्चपाणिना॥३॥कतार्थचावगच्छामिपरमात्मानमाहवे॥शत्रूंश्चविजितान्सर्वान्निर्दत्तंचत्रयोजनं॥४॥ इत्येवंचितयानस्य पार्थस्यामिततेनसः॥ ततोवैदूर्यवर्णाभोभासयन्सर्वतोदिशः॥ यादोगणवतःश्रीमानाजगामजलेश्वरः॥ ५॥ नागैर्नदैर्नदीभिश्वदैत्यैःसाध्येश्र्वदैवतैः॥ वरु णोयादसांभर्त्तावशीतंदेशमागमत्॥६॥अथजांबूनदवपुर्विमानेनमहाचिषा॥कुवेरःसमनुप्रामोयक्षैरनुगतःप्रभुः॥७॥ विद्योतयन्त्रिवाकाशमद्भुतोपम दर्शनः॥धनानामीश्वरःश्रीमानर्जुनंद्रषुमागतः॥८॥तथालोकांतरुद्धीमान्यमःसाक्षात्रतापवान्॥मर्त्यमूत्तिधरैःसाधीपतिभिलीकभावनैः॥९॥दंड पाणिरचित्यात्मासर्वभूतविनाशकत्॥वैवस्वतोधर्मराजोविमानेनावभासयन्॥१०॥व्यान्छोकान्गुत्यकांश्चैवगंधर्वाश्चिसपन्नगान् ॥ दितीयद्वमार्त्तेडोयु गांतेसमुपस्थिते॥ ११॥ तेभानुमंतिचित्राणिशिखराणिमहागिरेः॥ समास्थायार्जुनंतत्रदृहशुस्तपसान्वितं॥ १२॥ ततोमुहूर्त्ताद्भगवानैरावतशिरोगतः॥ आजगामसहेंद्राण्याशकःसुरगणैर्दतः॥ १३॥पांडुरेणातपत्रेणधियमाणेनमूर्द्धनि॥शुशुभेतारकाराजःसितमश्रमिवस्थितः॥ १४॥ संस्तूयमानोगंधवै र्ऋषिभिश्वतपोधनैः॥शृंगंगिरेःसमासाद्यतस्थौसूर्यइवोदितः॥ १५॥अथमेघस्वनोधीमान्व्याजहारशुभांगिरं॥ यमःपरमधर्मज्ञोदक्षिणांदिशमास्थितः ॥१६॥अर्जुनार्जुनपश्चास्मान्लोकपालान्समागतान्॥दृष्टितेवितरामोद्यभवानईतिदर्शनं॥१७॥पूर्विषिरमितात्मात्वंनरोनाममहाबलः॥ नियोगाद्वसण स्तातमर्त्यतांसमुपागतः॥ १८॥ त्वयाचवसुसंभूतोमहावीर्यःपितामहः॥भीष्मःपरमधर्मात्मासंसाध्यश्चरणेनघ॥ १९॥

कृत्यं निर्वत्तंनिष्यन्तं ॥ ४॥ वैदूर्यरत्नविशेषः 'यादांसिजलजंतवस्तेषांगणः ॥ ५॥ नागैःसर्पैः ॥ ६॥ ७॥ ८॥ ९॥ १०॥ ११॥ भानुमंतिदीप्तिमंति ॥ १२ ॥ १३॥ १४॥ १५॥ १६॥ 🛱 वितरामः यच्छामः ॥ १७ ॥ १८ ॥ संसाध्यःजेतन्यः ॥ १९ ॥

11801